"किउ बिधि दुतर तरीऐ"

• माइआ सर सबल वरते जीउ किउ करि दुतर तरिआ जाई ।
राम नाम करि बोहिथा जीउ सबद खेवट विचि पाई ।

अर्थः- माया के मोह का लबालब भरा समुंदर अपना जोर डाल रहा है, इसमें से तैरना बहुत ही मुश्किल है । हे भाई ! कैसे इसमें से पार लंघा जाए ? हे भाई ! परमात्मा के नाम को जहाज बना, गुरु के शब्द को मल्लाह बना के उस जहाज में बैठा । यदि मनुष्य परमात्मा के नाम - जहाज में गुरु के शब्द - मल्लाह को बैठा दे, तो परमात्मा स्वयं ही माया के सरोवर से पार लंघा देता है ।

सबद खेवट पिच पाए हरि आपि लघाए इन बिध दुतर तरीऐ । गुरमुखि भगति परापति होवै जीवतिआ इउ मरीऐ ।

अर्थः- हे भाई ! इस दुश्वार माया - सरोवर में यूँ ही पार लांघ सकते हैं । गुरु की शरण पड़ने से परमात्मा की भक्ति प्राप्त हो जाती है, इस तरह दुनिया के कार्य - व्यवहार करते हुए माया की ओर से अछोह हो जाते हैं ।

खिन महि राम नाम किलविख काटे भए पवित सरीरा । नानक राम नाम निसतारा कंचन भए मनूरा ।1।

अर्थः- हे नानक ! परमात्मा के नाम की इनायत से सारे पाप एक छिन में कट जाते हैं । जिसके काटे जाते हैं, उसका शरीर पवित्र हो जाता है । परमात्मा के नाम से ही माया - सरोवर से पार लांघ सकते हैं और लोहे की मैल जंग लगा लोहे जैसा नकारा हुआ मन सोना बन जाता है ।

इसतरी पुरख कामि विआपे जीउ राम नाम की बिधि नही जाणी । मात पिता सुत भाई खरे पिआरे जीउ डूब मुए बिन पाणी ।

अर्थः- माया के मोह के प्रभाव में स्त्री और मर्द काम - वासना में फसे रहते हैं, परमात्मा के नाम जपने की विधि नहीं सीखते । माया के मोह में फसे जीवों को अपने माता - पिता, पुत्र - भाई ही बहुत प्यारे लगते हैं, जिस सरोवर में पानी नहीं, पानी की जगह मोह है उस में डूब के नाको नाक फंस के आत्मिक मौत सहेड़ लेते हैं ।

डूबि मुए बिन पाणी गति नही जाणी हउमै धात संसारे । जो आइआ सो सभ को जासी उबरे गुर वीचारे ।

अर्थः- मोह रूपी पानी वाले माया - सरोवर में नाको नाक फंस के जीव आत्मिक मौत ले लेते है और अपने आत्मिक जीवन को नहीं परखते - जाचते । इस तरह संसार में जीवों को अहंकार की भटकना लगी हुई है । जो भी जीव जगत में जनम ले के आता है वह इस भटकना में फंस जाता है, इसमें से वही बचते हैं जो गुरु के शब्द को अपनी सोच - मण्डल में बसाते हैं ।

गुरमुखि होवै राम नाम वखाणै आपि तरै कुल तारे । नानक नाम वसै घट अंतरि गुरमति मिले पिआरे ।2।

अर्थः- जो मनुष्य गुरु के सन्मुख हो के परमात्मा का नाम उच्चारता है, वह खुद इस माया - सरोवर से पार लांघ जाता है, अपनी कुलों को भी पार लंघा लेता है । हे नानक ! जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का नाम आ बसता है, वह गुरु की मति का आसरा ले के प्यारे प्रभु को मिल जाता है ।

राम नाम बिन को थिर नाही जीउ बाजी है संसारा । द्रिड़ भगति सची जीउ राम नाम वापारा ।

अर्थः- हे भाई ! ये जगत परमात्मा की रची हुई एक खेल है इस में परमात्मा के नाम के बिना और कोई सदा कायम रहने वाला नहीं है । हे भाई ! परमात्मा का नाम - वणज ही सदा कायम रहने वाला है ।

राम नाम वापारा अगम अपारा गुरमती धन पाईऐ । सेवा सुरति भगति इह साची विचह आप गवाईऐ ।

अर्थः- अगम्य पहुँच से परे और बेअंत परमात्मा का नाम -वणज ही सदा कायम रहने वाला धन है, ये धन गुरु की मति पर चलने से मिलता है । प्रभु की सेवा भक्ति, प्रभु चरणों में तवज्जो जोड़नी ये सदा कायम रहने वाली राशि है इसकी इनायत से अपने अंदर से स्वैभाव दूर कर सकते हैं ।

हम मति हीण मूरख मुगध अंधे सतिगुरि मारगि पाए । नानक गुरमुखि सबदि सुहावे अनदिन हरि गुण गाए ।3।

अर्थः- हम अल्प - बुद्धि वालों को, मूर्खों को, माया के मोह में अंधे हुओं को सतिगुर ने ही जीवन के सही रास्ते पर डाला है । हे नानक ! गुरु के सन्मुख रहने वाले मनुष्य गुरु के शब्द में जुड़ के सुंदर आत्मिक जीवन वाले बन जाते हैं, और, वह हर वक्त परमात्मा के गुण गाते रहते हैं ।

आपि कराए करे आपि जीउ आपे सबदि सवारे । आपे सतिगुर आपि सबद जीउ जुग जुग भगत पिआरे ।

अर्थः- पर हे भाई ! जीवों के वश कुछ नहीं माया - सरोवर में डूबने से बचाने वाला प्रभु स्वयं ही है प्रभु खुद ही प्रेरणा करके जीवों से काम करवाता है जीवों में व्यापक हो के खुद ही सब कुछ करता है

जुग जुग भगत पिआरे हरि आपि सवारे आपे भगती लाए । आपे दाना आपे बीना आपे सेव कराए ।

अर्थः- प्रभु खुद ही गुरु के शब्द में जोड़ के जीवों के जीवन सुंदर बनाता है । प्रभु खुद ही सतगुरु मिलाता है, खुद ही गुरु का शब्द बख्शता है, और खुद ही हरेक युग में अपने भक्तों को प्यार करता है । हरेक युग में हरि अपने भक्तों को प्यार करता है, खुद ही उनके जीवन को सँवारता है, खुद ही उन्हें भक्ति में जोड़ता है ।

आपे गुणदाता अवगुण काटे हिरदै नाम वसाए । नानक सद बलिहारी सचे विटहु आपे करे कराए ।4। (3-245-246)

अर्थः- वह खुद ही सबके दिल की जानने वाला और पहचानने वाला है, वह खुद ही अपने भक्तों से अपनी सेवा - भक्ति करवाता है । हे भाई ! परमात्मा खुद ही अपने गुणों की दात बख्शता है, हमारे अवगुण दूर

करता है, और हमारे हृदय में अपना नाम बसाता है । हे नानक ! कह मैं उस सदा कायम रहने वाले परमात्मा से सदके जाता हूँ, वह खुद ही सब कुछ करता है और स्वयं ही सब कुछ कराता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"